स्नातकोतर – हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य शिक्षण के उददेश्य :–

1. प्राचीन एवं मध्य कालीन काव्य तथा उसके इतिहास के बारे में विस्तार पूर्वक ज्ञान प्राप्त कराना।
2. आधुनिक हिन्दी गद्य और उसके इतिहास से अवगत कराना।
3. प्रयोजन मूलक हिन्दी के माध्ययम से पत्रकारिता एवं हिन्दी के प्रायोगिक ज्ञान में कौशल विकास कराना ।
4. अनुवाद विज्ञान की परिभाषा, क्षेत्र स्वरूप एवं सीमाओं और समस्याओं का अध्ययन एवं प्रायोगिक कौशल का विकास।
5. भाषा विज्ञान के स्वरूप,उद्देश्य इतिहास विकास एवं उपयोगिता के बारे में ज्ञान प्राप्त कराना।
6. हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवियों ,साहित्यकारों का अध्ययन मनन।
7. शोध प्रविधि एवं दृश्य,श्रव्य माध्ययम लेखन तथा संचार के माध्ययम का अध्ययन व कौशल विकास ।
8. हिन्दी गद्य साहित्य के प्रमुख स्तम्भ आचार्य रामचंद्र शुक्ल, मुंशी प्रेमचंद्र, जयशंकर प्रसाद आदि की प्रसिद्ध रचनाओं पर समीक्षात्मक दृष्टि विकसित कराना।

संभावित परिणाम :–

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर पायेगें।
2. हिन्दी के प्रयोजन मूलक स्वरूप के माध्यम से कौशल,विकास होगा।
3. अनुवाद विज्ञान के द्वारा कौशल विकास होगा।
4. हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकारों व इनकी रचनाओं का अध्ययन मनन कर उत्कृष्टता प्राप्त करेगें।

COURSE CODE:6HMHL 101

प्रचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास-I

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1.विद्यापति,जायसी के काव्य के मर्म को समझना।

2.विद्यापति, कबीर और जायसी का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

3.प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकारों का अध्ययन करना।

4.प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य का इतिहास को समझना।

पाठ्यक्रमः

इकाई – 1

विद्यापति, कबीर एंव जायसी के निर्धारित पदों की व्याख्या

निर्धारित व्याख्यांश –

विधापति – 20 पद (विधापति, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

पद क्रमांक – 1,4,5,7,8,11,12,14,15,16,20,22,23,26,27,28,31,35,36,39,

2. कबीर – कबीर ग्रंथावली – डॉ0 श्यामसुंदर दास

गुरूदेव को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), सुमिरण को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), विरह को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), ज्ञान– विरह को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10), परचा को अंग (साखी क्रमांक 1 से 10),

3.जायसी – पदमावत, संपादक – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

पद क्रमांक :– 1,11,16,21,24,50,60,65,69,70, (दस पद)(मानसरोदक खण्ड एवं नागमती वियोग खण्ड)

इकाई – 2

विधापति, कबीर, और जायसी का आलोचनात्मक अध्ययन।

इकाई – 3

प्राचीनकाल एवं मध्यकालीन काव्य (निर्गुणधारा) का इतिहास प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं रचनाकारों का अध्ययन।

इकाई – 4

निम्नलिखित कवियों का द्रुतपाठ द्रुतपाठ के कवि – चन्दबरदाई, अमीर खुसरो, रैदास, नामदेव का अध्ययन।

इकाई – 5

प्राचीन एंव मध्यकालीन काव्य तथा उसके इतिहास का सारगर्भित अध्ययन।

अपेक्षित परिणामः

- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हो सकेगें।
- चन्दबरदाई, अमीर खुसरो, रैदास, नामदेव के विषय में अनुभव एवं ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- विद्यापति, कबीर एंव जायसी से सम्बंधित आलोचनात्मक ज्ञान के साथ उनके पदो से भी अवगत हो सकेगें ।

COURSE CODE:6HMHL 102

आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास-I

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. गद्य साहित्य के हिन्दी साहित्यकारों के साहित्य का अध्ययन।
2. गद्य साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं , आधे–अधूरे एवं गोदान का मनन
3. हिन्दी, नाटक, रंगमंच, उपन्यास के इतिहास की प्रवृत्तियों एवं रचनाकारों का अध्ययन करना एवं हिन्दी गदय इतिहास को समझाना।

पाठ्यक्रमः

इकाई–1

निम्नलिखित साहित्यकारों के निर्धारित साहित्य की व्याख्या

1– स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद

2– आधे–अधूरे – मोहन राकेश

3– गोदान – प्रेमचन्द

इकाई–2

स्कंद गुप्त, आधे–अधूरे एवं गोदान का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई–3

हिन्दी नाटक, रंगमंच एवं उपन्यास के इतिहास की विविध प्रवृत्तियॉ एंव रचनाकार।

इकाई–4

निम्नलिखित निर्धारित साहित्यकारों का द्रुतपाठ

1 – नाटककार – भारतेन्दु हरीशचन्द्र, डॉ0 रामकुमार वर्मा, जगदीशचन्द्र माथुर, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल।

2– उपन्यासकार– जैनेन्द्र, अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, भीष्म शाहनी, मन्नू भण्डारी

इकाई–5

आधुनिक हिन्दी गद्य और उसके इतिहास का सारगर्भित अध्ययन

अपेक्षित परिणामः

- विद्यार्थी हिन्दी गद्य साहित्य इतिहास व रचनाकारों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें ।
- साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं का अध्ययन –मनन कर सकेगें।

Chairperson
(Board of Studies)

Dean
(Academic Council)

(Registrar)
Seal

COURSE CODE:6HMHL 103

भारतीय काव्यशास्त्र

उद्देश्य के पाठ्यक्रमः

1. संस्कृत काव्य शास्त्र से संबंधित काव्य, लक्षण प्रयोजन काव्य के प्रकार रस–सिद्धांत, स्वरूप, अलंकार सिद्धांत व वर्गीकरण का अध्ययन ।
2. रीति सिद्धांत–अवधारणा काव्य गुण रीति शैली व प्रमुख स्थापनाएँ व वक्रोक्ति सिद्धांत का अध्ययन ।
3. ध्वनि सिद्धांत,औचित्य सिद्धांत का अध्ययन करना।
4. हिन्दी आचार्यो का काव्य शास्त्रीय चिंतन व आलोचनात्मक मनन।

पाठ्यक्रमः

इकाई – 1

संस्कृत काव्य शास्त्र : काव्य– लक्ष्ण, काव्य– हेतु, काव्य – प्रयोजन काव्य के प्रकार।

रस–सिद्धांत : रस का स्वरूप, रस – निष्पत्ति, रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा । अलंकार सिद्धांत : मूल स्थापनाएं, अलंकारों का वर्गीकरण।

इकाई – 2

रीति– सिद्धांत : रीति की अवधारणा, काव्य–गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ। वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद ।

इकाई – 3

ध्वनि सिद्धांत : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि – सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत–व्यंग्य, चित्रकाव्य।

औचित्य सिद्धांत : प्रमुख स्थापनाएं, औचित्य के भेद।

इकाई – 4

हिन्दी कवि – आचार्यों का काव्य शास्त्रीय चिंतन : लक्षण–काव्य परंपरा एवं कवि – शिक्षा

इकाई – 5

हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : शास्त्रीय व्यक्तिवादी / सौष्ठव वादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय

अपेक्षित परिणामः

- विद्यार्थियों भारतीय एवं पाश्चात्य शास्त्रियों के विभिन्न विचारों एवं रचनाओं का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होगें।
- विद्यार्थी आलोचनाओं की प्रवृत्यियों एवं विशेषताओं से लाभावान्वित होगें।

Chairperson	**Dean**	**(Registrar)**
(Board of Studies)	**(Academic Council)**	**Seal**

COURSE CODE:6HMHL 104

प्रयोजनमूलक हिन्दी

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1.हिन्दी के विभिन्न रूपों , पत्रो के प्रकार एवं कामकाजी हिन्दी में दक्ष करवाना।
2.हिन्दी के व्यवहारिक प्रयोग व कम्प्यूटर के विभिन्न भागो का प्रयोग एंव इंटरनेट के प्रयोग हेतु कौशल का विकास।
3. हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास का अध्ययन एंव अनुशीलन।

पाठ्यक्रम

इकाई – 1

कामकाजी हिन्दी –

हिन्दी के विभिन्न रूप– सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।

कार्यालयीन हिन्दी, राजभाषा के प्रमुख प्रकार्य :– प्रारूपण, पत्र–लेखन संक्षेपण, पल्लव, टिप्पणी।

इकाई – 2

पारिभाषिक शब्दावली – स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली एवं उनका व्यावहारिक प्रयोग।

इकाई – 3

हिन्दी कम्प्यूटिंग–

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा बेब पब्लिशिंग ।

इंटरनेट, संपर्क उपकरणों का परिचय, प्राथमिक, रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र। बेब पब्लिकेशन ।

इंटर एक्सरलोइट अथवा नेट स्केप।

लिंक, ब्राउजिंग पोर्टल, ई0मेल भेजना/ प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउलोडिंग एवं अपलोडिंग के सॉफ्टवेयर , पैकेज।

इकाई – 4

पत्रकारिता :– स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार।

हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास।

समाचार–लेखन, कला।

संपादन के आधारभूत तत्व।

व्यावहारिक प्रूफ शोधन।

इकाई – 5

पत्रकारिता : शीर्षक की संरचना, लीड, इण्ट्रो एवं शीर्षक संपादन।

संपादकीय लेखन पृष्ठसज्जा

साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन

प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार– संहिता।

अपेक्षित परिणामः

- पत्रकारिता संबंधी ज्ञान के साथ विद्यार्थी लेखन एवं विभिन्न पत्र व्यवहार के कौशल में दक्ष हो सकेगें।
- हिन्दी के आधुनिक साफ्टवेयर, टूल्स एवं संचार साधनों के कौशल में दक्ष हो सकेगें।

COURSE CODE:6HMHL 105

समकालीन विमर्श(स्त्री एवं दलित विमर्श)

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

- समकालीन विमर्श के साहित्य से युवा विद्यार्थियों को परिचित करवाना।
- समकालिन विमर्श के साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से परिचित करवाना।
- स्त्री एवं दलित विमर्श की अवधारणा , विकास यात्रा से परिचित करवाना।
- स्त्री एवं दलित विमर्श के समकालीन साहित्यकारों एवं विचारकों से परिचित करवाना।

पाठ्यक्रमः

इकाई–1 समकालीन विमर्श की विकास यात्रा (स्त्री एवं दलित विमर्श) ।

इकाई– 2 स्त्री विमर्श की अवधारणा ,उदभव , विकास विशेषताएँ ।

इकाई– 3 दलित विमर्श की आवधारणा , उदभव एवं विकास विशेषताएँ ।

इकाई– 4 परंपरागत साहित्य और स्त्री एवं दलित साहित्य समीक्षत्मक अध्ययन

इकाई– 5 द्रुतपाठ निर्धारित चिंतक–मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल ,ओमप्रकाश वाल्मीकि, प्रभा खेतान।

अपेक्षित परिणाम–

- समकालिन विमर्श के अध्ययन के माध्यम से छात्र समाज के कर्तव्यों के प्रति सजग होंगे।
- समकालीन विमर्श के साहित्य से युवा विद्यार्थी से परिचित होगें।
- समकालिन विमर्श के साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से परिचित होगें।
- स्त्री एवं दलित विमर्श की अवधारणा , विकास यात्रा से परिचित होगें।
- स्त्री एवं दलित विमर्श के समकालीन साहित्यकारों एवं चिंतको से परिचित होगें।

Chairperson
(Board of Studies)

Dean
(Academic Council)

(Registrar)
Seal

COURSE CODE:6HMHL 201

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य तथा उसका इतिहास-II

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

1.हिन्दी के प्रसिद्ध कवि सूरदास, तुलसीदास एवं बिहारी की रचनाओं की व्याख्या।

2.भक्तिकाल एवं रीतिकाल का इतिहास एवं विभिन्न कवियों की रचनाओं अध्ययन ।

3.प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य को इतिहास एवं विकास का सारगर्भित अध्ययन।

पाठ्यक्रम

इकाई – 1

निम्नलिखित रचनाकारों के निर्धारित पदों की व्याख्या

निर्धारित व्याख्यांश

सूरदास :– भ्रमरगीत सार – संपादक रामचंद्र शुक्ल, पद क्रमांक 51 से 100।

तुलसीदास – रामचरितमानस – अयोध्या काण्ड, दोहा, क्रमांक 51 से 100।

बिहारी – बिहारी रत्नाकर – संपादक जगन्नाथ रत्नाकर, दोहा क्रमांक 1 से 50।

इकाई – 2

सूरदास, तुलसीदास एवं बिहारी का आलोचनात्मक अध्ययन।

इकाई – 3

भक्तिकाल (सगुण भक्तिधारा) एवं रीतिकाल का इतिहास, प्रवृत्तियॉ और प्रमुख रचनाकार

इकाई – 4

निम्नलिखित रचनाकारों का द्रुतपाठ

द्रुतपाठ के कवि – नन्ददास, मीराबाई, घनानंद और केशव ।

इकाई – 5

प्राचीन एंव मध्यकालीन काव्य तथा उसके इतिहास का सारगर्भित अध्ययन।

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थी प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास को जान सकेगें।
- विद्यार्थी ने विभिन्न कवियों व उनके इतिहास की जानकारी प्राप्त किया।
- हिन्दी विषय के अन्तर्गत लघुशोध व लघुशोध कार्य करने हेतु प्रेरित हुए।
- सूर,तुलसी,बिहारी इत्यादि कवियों के कालजयी साहित्य को आत्मसात् कर सकेगें।
- भ्रमरगीत को रामचरित मानस विहारी रत्नाकर जैसी उत्कृष्ट रचनाओं का मनन कर सकेगें।

COURSE CODE:6HMHL 202

आधुनिक हिन्दी गद्य और उसका इतिहास-II

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1.हिन्दी के विभिन्न साहित्यकारो, रचनाकारों व उनकी रचनाओं का अध्ययन मनन करना।
2.बाणभट्ट की आत्मकथा निबंध, कहानी पर समीक्षात्मक विश्लेषण करना।
3.हिन्दी गद्य की विधाओं(रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रा–वृतांत, व्यंग आदि) का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना।
4.हिन्दी के विभिन्न निबंधकारों, कहानीकारों, स्फुटग्रंथ (भारतेन्दु हरिशचंद्र,प्रतापनारायण मिश्र, अज्ञेय, यशपाल, अमृतराय, माखनलाल चतुर्वेदी) का परिचय एवं रचनाओं का अध्ययन।
5.आधुनिक हिन्दी गद्य का इतिहास एवं विकास का अध्ययन मनन।

पाठ्यक्रम

इकाइ–1

निम्नलिखित साहित्यकारों की निर्धारित रचनाकारों की व्याख्या
निर्धारित व्याख्यांश
1 – बाणभट्ट की आत्मकथा–हजारीप्रसाद द्विवेदी
2 – निबंध–
1. देश सेवा का महत्व–बालकृष्ण भट्ट
म्युनिसीपेलटी के कारनामे–महावीर प्रसाद द्विवेदी
काव्य में लोकमंगल की साधानावस्था–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
अशोक के फूल–हजारीप्रसाद द्विवेदी
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है–विद्यानिवास मिश्र
प्रिया नीलकंठी–कुबेरनाथ राय
पगडण्डियों का जमाना– हरिशंकर परसाई
3 – निर्धारित कहानियाँ –
उसने कहा था (चन्द्रधर शर्मा गुलेरी)
पूस की रात (प्रेमचंद)
गुण्डा (जयशंकरप्रसाद)
अपना अपना भाग्य (जैनेंद्र कुमार)
लंदन की एक रात (निर्मल वर्मा)
राजा निरबंसिया (कमलेश्वर)
सिक्का बदल गया (कृष्णा सोबती)
4 – पथ के साथी – महादेवी वर्मा

इकाई – 2

बाणभट्ट की आत्मकथा, निर्धारित निबंध, कहानी एवं पथ के साथी का समीक्षात्मक अध्ययन।

इकाई – 3

हिन्दी, कहानी, निबन्ध एवं अन्य गद्य विधाओं (रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, यात्रावृत्तांत, व्यंग्य आदि) के इतिहास प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकार।

इकाई – 4

निर्धारित रचनाकारों का द्रुतपाठ

निर्धारित द्रुतपाठ

निबन्धकार – भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह।

कहानीकार – अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, अमरकांत

स्फुट ग्रंथ – 1. अमृतराय (कलम का सिपाही) 2. शिवप्रसादसिंह उत्तर योगी 3. हरिवंशराय बच्चन, (क्या भूलूं क्या याद करूं), 4. राहुल सांकृत्यायन (घुमक्कड़ शास्त्र), 5. माखनलाल चतुर्वेदी, साहित्य देवता)

इकाई – 5

आधुनिक हिन्दी गद्य और उसके इतिहास का सारगर्भित अध्ययन।

अपेक्षित परिणाम–

- विद्यार्थी प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य के बारे में ज्ञान का विस्तार कर सकेगें।
- प्रसिद्ध हिन्दी के लेखको व साहित्यकारों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें ।
- विद्यार्थी शोधकार्य करने हेतु प्रेरित होगें।
- इस दिशा में नवीन शोध को बढावा मिलेगा।
- श्रेष्ठ साहित्य कारों की श्रेष्ठ रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थी,निबंधकला कहानी कला आत्मकथा,व्यंग्य,संस्मरण इत्यादि गद्य की विधाओं में दक्षता हासिल कर सकेगें।

COURSE CODE:6HMHL 203

पाश्चात्य काव्य शास्त्र

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

1. पाश्चात्य विद्वानों प्लेटो, अरस्तु लांजाइनस के काव्य व सिद्धांतो का अध्ययन मनन करना।
2. पाश्चात्य विद्वानों जैसे ड्राइडन के काव्य सिद्धांत, वर्डस वर्थ काव्य भाषा का सिद्धांत, कालरिज, कल्पना सिद्धांत आदि का विश्लेषण करना।
3. मैथ्यू आर्नल्ड, टी.एस इलियट, आई.ए. रिचर्डस आदि की आलोचना, परिकल्पना एवं व्यवहारिक आलोचना का अध्ययन अनुशीलन करना।
4. भारतीय एवं पाश्चात्य वादों, सिद्धांतों, आधुनिक समीक्षा की प्रवृत्तियों का अध्ययन मनन करना।

पाठ्यक्रम

इकाई – 1

प्लेटो : काव्य – सिद्धांत

अरस्तू : अनुकरण – सिद्धांत, त्रासदी– विवेचन, विवेचन सिद्धांत

लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा

इकाई–2

ड्राइडन के काव्य सिद्धांत

वड्र्सवर्थ : काव्य – भाषा का सिद्धांत

कालरिज : कल्पना – सिद्धांत और ललित – कल्पना

इकाई – 3

मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य

टी.एस. इलियट : परंपरा की परिकल्पना और वैयाक्तिक प्रज्ञा, निवैर्यक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य।

आई.ए. रिच्र्डस : रागात्मक अर्थ । संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना।

इकाई – 4

सिद्धांत और वाद : अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।

इकाई – 5

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ : संरचनावाद, शैलीविज्ञान, विखंडनवाद, उत्तर आधुनिकतावाद।

अपेक्षित परिणामः

- विद्यार्थी विभिन्न पाश्चात्य विद्वानो के विचारों का प्रभाव व हिन्दी में उनके योगदान के बारे में ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होगें।
- पाश्चात्य एवं आधुनिक काव्य शास्त्र के सिद्धांतो ,वादों ,प्रवृत्तियों इत्यादि को आत्मसात् कर सकेगें।
- इस विषय में शोध में प्रवृत्त होगें।

Chairperson
(Board of Studies)

Dean
(Academic Council)

(Registrar)
Seal

COURSE CODE: 6HMHL 204

अनुवाद विज्ञान

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. अनुवाद की परिभाषा, क्षेत्र, स्वरूप एवं सीमाओं का अध्ययन करवाना।
2. अनुवाद, कला, विज्ञान के उपकरण, कोश, पारिभाषिक, शब्दावली कम्प्यूटर का अध्ययन करवाना।
3. अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि, पुर्नगठन का अध्ययन करवाना।
4. अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत एवं अनुवाद के क्षेत्र व प्रकार का अध्ययन विश्लेषणा करवाना ।
5. अनुवाद की समस्याओं से परिचित करवाना।

पाठ्यक्रम

इकाई–1

अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र और सीमाएँ।

इकाई–2

अनुवाद कला, विज्ञान या शिल्प। अनुवाद की इकाईः शब्द, पदबन्ध, वाक्य, पाठ तथा अनुवाद के उपकरण– कोश,पारिभाषिक शब्दावली,कम्प्यूटर।

इकाई–3

अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधिः विश्लेषण, अन्तरण, पुनर्गठन। अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न चरण, स्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थान्तरण की प्रक्रिया, अनुदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ संप्रेषण की प्रक्रिया, अनुवाद प्रक्रिया की प्रकृति।

इकाई–4

अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत। अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार– कार्यालयीन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचार माध्यम, विज्ञापन आदि।

इकाई–5

अनुवाद की समस्याएँ : सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याऐं, कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएँ। विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएँ।

अपेक्षित परिणामः

- अनुवाद की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र, प्रकार समस्याओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- अनुवाद के क्षेत्र में लघुशोध व शोधकार्य करने हेतु प्रेरित हुये।
- विद्यार्थियों में अनुवाद विषय में कौशल का विकास होगा।

Chairperson **(Board of Studies)**	**Dean** **(Academic Council)**	**(Registrar)** **Seal**

COURSE CODE- 6HMHL 205

लोकसाहित्य

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

- लोक साहित्य का आशय, संकलन की समस्याएं, रूपों का वर्गीकरण, लोकगीत, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोकसंगीत आदि से परिचित कराना ।
- लोक–कथाः वृतःकथा, परिकथा एवं लोकःनाट्य, रामलीला, रासलीला, नाट्य की परम्परा एवं प्रविधि, नाटक और रंगमंच के प्रभाव आदि से परिचित कराना ।
- लोक–संगीतः लोकवाद्य तथा विशिष्ट लोकधुनों, लोकभाषा–लोक प्रचलित मुहावरों कहावतों, पहेलियों आदि से परिचित कराना ।
- जनपदीय भाषाओं के लोक साहित्य से परिचित कराना।
- लोकसाहित्य का महत्व समझा कर लोकजीवन की व्यापकता से जोड़ना।

पाठ्यक्रमः

इकाई –1

लोक साहित्य का आशय, लोक साहित्य के संकलन की समस्याएँ।

लोक–साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण लोकगीत, लोकनाट्य लोककथा,लोकगाथा, लोक नृत्य–नाट्य लोक संगीत। लोक गीत : संस्कार–गीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत जाति गीत।

इकाई –2

लोक–नाट्य रामलीला, रासलीला, कीर्तनियॉ, स्वांग,यक्षगान, भवाई संपेड़ा, विदेसिया, माच, भौंड़ तमाशा, नौटंकी, जात्रा, कथकली। हिन्दी लोक– नाट्य की परम्परा एवं प्रविधि। हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव।

इकाई –3

लोक – कथा : व्रत–कथा, परी– कथा, नाग– कथा, बोध–कथा, कथानक–रूढ़ियॉ अथवा अभिप्राय। लोक–गाथा :ढ़ोला–मारू, गोपीचन्द्र– भरथरी, लोरिक, नल– दमयंती, लैला– मंजनूँ, हीर–रॉझा, सोहनी–महीवाल, लोरिक – चंदा, बगडावत आल्हा–हरदौल।

इकाई –4

लोक–संगीत : लोकवाद्य तथा विशिष्ठ लोक धुनें।लोक – नृत्य नाट्य।

लोक–भाषा : लोक सुभाषित मुहावरे, कहावतें, पहेलियॉ।

इकाई –5

निम्नलिखित जनपदीय भाषाओं के लोक– साहित्य में से किसी एक का

अध्ययन : खड़ीबोली, छत्तीसगढ़ी , बघेली, मालवीय, बुन्देली

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थीयों ने लोक साहित्य, लोककथा, लोकसंगीत एवं लोकभाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- लोक साहित्य के लोक रंजन एवं साहित्यक तत्व से परिचित हो सकेगें।
- लोक साहित्य को समृद्ध करते हुए शोध की ओर प्रवृत होगें।

आधुनिक हिन्दी काव्य और उसका इतिहास

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

1. हिन्दी प्रसिद्ध कवि मैथलिशरण गुप्त एवं जयशंकर प्रसाद का अध्ययन एवं व्याख्या।
2. मैथिलीशरण गुप्त और जयशंकर प्रसाद के साहित्यका समीक्षात्मक का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का अध्ययन मनन ।
4. द्रुत पाठ के माध्य से निर्धारित कवियों रत्नाकर, हरिऔध, महादेवी वर्मा आदि का अध्ययन करना।

पाठ्यक्रम

इकाई–1

निम्नलिखित कवियों की निर्धारित रचनाओं की व्याख्या

निर्धारित व्याख्यांश–

1– मैथिलीशरण गुप्त – साकेत का नवम् सर्ग

2– जयशंकर प्रसाद –कामायनी चिंता ,श्राद्ध,इडा सर्ग

इकाई–2

मैथिलीशरण गुप्त का समीक्षात्मक अध्ययन।

इकाई–3

जयशंकर प्रसाद का समीक्षात्मक अध्ययन।

इकाई–4

आधुनिक हिन्दी काव्य (छायावाद तक) की प्रमुख प्रवृत्तियॉ

इकाई–5

निर्धारित कवियों का द्रुतपाठ

द्रुत पाठ के निधारित कवि :– जगन्नाथ दास रत्नाकार , अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध , महादेवी वर्मा ,और बाल कृष्ण शर्मा नवीन

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी काव्य के इतिहास तथा प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- विद्यार्थी इस विषय में शोध करने हेतु प्रेरित होगे।
- हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों – कामायनी ,साकेत आदि का समीक्षात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. भाषा और भाषा विज्ञान का वर्णननात्मक , ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन मनन करवाना ।
2. स्वप्न प्रक्रिया, व्याकरण , रूप विज्ञान की अवधारणा, वाक्य की अवधारणा का अध्ययन विश्लेषण करवाना ।
3. अर्थ विज्ञान की अवधारणा व साहित्य और भाषा विज्ञान की उपयोगिता का अनुशीलन।

पाठ्यक्रमः

इकाई–1

भाषा और भाषा विज्ञान– भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार, भाषा संरचना और भाषिक प्रकार्य, भाषा विज्ञाान स्वरूप एवं व्याप्ति,अध्ययन की दिशाएं– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।

इकाई–2

स्वन प्रक्रिया– स्वरूप और शाखाएं, वागयंत्र और उनके कार्य, स्वनिम की अवधारणा– स्वनों का वर्गीकरण, स्वन गुण स्वनिक–परिवर्तन।

इकाई–3

व्याकरण– रूप विज्ञान का स्वरूप, रूपिम की अवधारणा।

वाक्य की अवधारणा– वाक्य के भेद– वाक्य–विश्लेषण– निकटस्थ अव्यव विश्लेषण गहन संरचना और बाह्य संरचना

इकाई–4

अर्थ विज्ञान–अर्थ की अवधारणा। शब्द और अर्थ का सम्बंन्ध। अर्थ प्राप्ति के साधन और अर्थ परिवर्तन

इकाई–5

साहित्य और भाषा विज्ञान– साहित्य के अध्ययन में भाषा विज्ञान के अंगो की उपयोगिता।

अपेक्षित परिणामः

- विद्यार्थी भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- विद्यार्थी भाषा विज्ञान के क्षेत्र में शोधकार्य करने हेतु प्रेरित होगें।
- विद्यार्थी भाषा विज्ञान के कार्यो व उपयोगिता को आत्मसात् कर सकेगें।

Chairperson (Board of Studies)	**Dean (Academic Council)**	**(Registrar) Seal**

हिन्दी साहित्य का इतिहास
Course Code: 6HMHL 303

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. हिन्दी साहित्य के इतिहास परम्परा व पुनर्लेखन की समस्याओं आदि से परिचित करवाना।
2. हिन्दी साहित्य के आदिकाल, की काव्यधाराओं, गद्य–साहित्य,प्रतिनिधि रचनाकार एवं रचनाओं का अध्ययन मनन करवाना।
3. पूर्व मध्यकाल भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास का अध्ययन विश्लेषण करवाना।
4. राम और कृष्ण काव्य एवं उत्तर मध्यकालीन रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन एवं अनशीलन करवाना।

पाठ्यक्रम

इकाई–1
हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा, और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ ।

इकाई–2
हिन्दी साहित्य के आदिकाल की पृष्ठ भूमि,, साहित्यक प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराऍं, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और इनकी रचनाऍं।

इकाई–3
पूर्वमध्यकाल भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक चेतना एवं भक्तिआन्दोलन, विभिन्न काव्य धाराएं तथा उनका विश्लेषण, प्रमुख निर्गुण सन्त कवि और प्रमुख सूफी कवियों का अवदान।

इकाई–4
राम और कृष्णकाव्य : प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्टय ।

इकाई–5
उत्तर मध्यकाल रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल सीमा और नामकरण, विविध धाराए रीति बद्ध रीति सिद्ध, रीतिमुक्त प्रवृतियाँ और विशेषताऍं।

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास का ज्ञान प्राप्त करेगें।
- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य में शोधकार्य करने हेतु प्रेरित होगें।
- विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि,इतिहास, विकास,प्रवृत्तियों के विश्लेषण में सक्षम हो सकेगें।

तुलसीदास
वैकल्पिक-I

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. तुलसीदास कृत रामचरितमानस से बालकाण्ड अयोध्याकाण्ड की व्याख्या एवं विश्लेषण में दक्ष करना ।
2. तुलसीदास की युगीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन मनन करवाना।
3. रामचरितमानस का समीक्षात्मक विश्लेषण करवाना।
4. हिन्दी में राम काव्य परंपरा एवं उनके कवि तथा द्रुत पाठ की रचनाओं के माध्यम से दोहावली पार्वती मंगल, जानकी मंगल का अनुशीलन कराना।
5. तुलसीदास के काव्य के प्रासंगिकता से अवगत कराना।

पाठ्यक्रमः

इकाई–1

निर्धारित रचनाओं की व्याख्या

पाठ्य विषय– तुलसीदासः– रामचरित मानस, (गीता प्रेस–गोरखपुर)

व्याख्यांश– रामचरित मानस– बालकाण्ड, आयोध्याकाण्ड,

इकाई–2

तुलसीदास की युगीन पृष्ठभूमि, सामाजिक ,राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ

इकाई–3

रामचरित मानस का समीक्षात्मक अध्ययन

इकाई–4

हिन्दी में राम काव्य परम्परा और उसके अन्य कवि ।

इकाई–5

निर्धारित रचनाओं का द्रुतपाठ

द्रुतपाठ की रचनाएँ– दोहावली , पार्वती मंगल , जानकी मंगल।

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थी तुलसीदास व उनकी रचनाओं का अध्ययन अनुशीलन कर सकेगें।
- तुलसीदास की युगीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का अध्ययन मनन करेगें।
- रामचरितमानस का समीक्षात्मक विश्लेषण कर पायेगें।
- हिन्दी में राम काव्य परंपरा एवं उनके कवि तथा द्रुत पाठ की रचनाओं के माध्यम से दोहावली पार्वती मंगल, जानकी मंगल का अनुशीलन कर सकेगें।
- तुलसी दास के काव्य के प्रासंगिकता से अवगत होगें।
- तुलसीदास से सम्बन्धित शोध की ओर प्रवृत्त होगें।

COURSE CODE: 6HMHL 305

सूरदास
वैकल्पिक–I

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

1. सूरसागर के , प्रारंभ से मथुरागमन के पूर्व तक पदों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक समीक्षा ।
2. सूर युगीन पृष्ठभूमि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ आदि का अध्ययन मनन।
3. सूरदास का जीवनवृत अंतःसाक्ष्य, बाह्य साक्ष्य का अनुशीलन।
4. द्रत पाठ के माध्यम से कवियों –कुंभनदास, कृष्णदास, परमानन्ददास आदि की कविताओं और व्यक्तित्व का अध्ययन मनन।

पाठ्यक्रम:

इकाई–1

निर्धारित पदों की व्याख्या

प्रारम्भ से मथुरागमन के पूर्व तक के पद।

इकाई–2

निर्धारित पदों (प्रारंभ से मथुरागमन से पूर्व तक) की आलोचनात्मक समीक्षा ।

इकाई–3

युगीन पृष्ठभूमि सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक, परिस्थितियाँ।

इकाई–4

सूरदास का जीवनवृत्त , अंतः साक्ष्य , बाह्य साक्ष्य।

इकाई–5

निर्धारित कवियों का द्रुतपाठ

द्रुतपाठ्य के कवि :– कुम्भनदास, कृष्णदास ,परमानन्ददास।

अपेक्षित परिणाम

1. सूरसागर के , प्रारंभ से मथुरागमन के पूर्व तक पदों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक समीक्षा कर सकेगे।
2. सूर युगीन पृष्ठभूमि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियाँ आदि का अध्ययन मनन में सक्षम होगें।
3. सूरदास का जीवनवृत अंतःसाक्ष्य, बाह्य साक्ष्य का अनुशीलन कर सकेगें।
4. द्रत पाठ के माध्यम से कवियों –कुंभनदास, कृष्णदास, परमानन्ददास आदि की कविताओं और व्यक्तित्व का अध्ययन मनन में सक्षम होगें।

Chairperson (Board of Studies)	**Dean (Academic Council)**	**(Registrar) Seal**

COURSE CODE: 6HMHL 306

पत्रकारिता प्रशिक्षण
वैकल्पिक–II

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

- विद्यार्थियों को सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य से परिचित कराना।
- पत्रकारिता के स्वरूप,अर्थ, विश्व–पत्रकारिता व भारत में पत्रकारिता के उदय से परिचित कराना।
- समाचार–पत्रकारिता, सम्पादन कला, पत्रकारिता प्रबंधन से अवगत करना।
- प्रेस कानून, प्रसार भारती आचार संहिता का ज्ञान कराना।

पाठ्यक्रम

इकाई–1

- पत्रकारिता का अर्थ, स्वरूप एंव प्रमुख प्रकार।
- विश्व–पत्रकारिता का उदय एवं भारत में पत्रकारिता का आरम्भ।
- हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास।

इकाई–2

- समाचार पत्रकारिता के मूल तत्व।
- समाचार पत्रों के विभिन्न स्तम्भों की योजना।
- समाचार के विभिन्न स्त्रोांत।
- संवाददाता की अर्हता,श्रेणी एवं कार्य पद्वति।

इकाई–3

- सम्पादन कला के सामान्य सिद्धान्त।
- दृश्य सामग्री–फोटो पत्रकारिता।
- पत्रकारिता संबंधी लेखन।
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता।
- प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रण कला।

इकाई–4

- पत्रकारिता का प्रबन्धनः प्रशासनिक व्यवस्था,बिक्री तथा वितरण व्यवस्था।
- लोक सम्पर्क तथा विज्ञापन।
- प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।
-

इकाई–5

- भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार,सूचना का अधिकार तथा मानवाधिकार।
- मुक्त प्रेस की अवधारणा।
- प्रसार भारती और सूचना प्रौद्योगिकी।
- प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

अपेक्षित परिणाम–

- विद्यार्थियों को सम्पूर्ण वैश्विक परिदृश्य से परिचित कराना होगें।
- पत्रकारिता के स्वरूप,अर्थ, विश्व–पत्रकारिता व भारत में पत्रकारिता के उदय से परिचित होगें।
- समाचार–पत्रकारिता, सम्पादन कला, पत्रकारिता प्रबंधन से अवगत होगें।
- प्रेस कानून, प्रसार भारती आचार संहिता का ज्ञान प्राप्त करेगें ।

COURSE CODE:6HMHL307

कोश विज्ञान
वैकल्पिकII

पाठ्यक्रम के उददेश्यः

- कोश –परिभाषा, स्वरूप, उपयोगिता, व्याकरण, समभाषी द्विभाषी एवं बहुभाषी कोश का अध्ययन ।
- काश–निर्माण की प्रक्रिया, सामग्री संकलन, व्याकरणिक कोटी, प्रयोग–प्रवृष्ठियां, संक्षिप्तियां, संदर्भ और प्रति संदर्भ का अध्ययन ।
- रूप अर्थ संबंध ,अनेकार्थकता, समानार्थकता, विलोमता, कोश निर्माण की समस्याएँ एवं कोश विज्ञान और अन्य विषयों का संबंध आदि का अध्ययन ।
- स्वचालित सामग्री संसाधन, कम्प्यूटर और कोश निर्माण– का अध्ययन ।

पाठ्यक्रमः

इकाई –1

कोश , परिभाषा और स्वरूप। कोश की उपयोगिता। कोश और व्याकरण का अत : संबंध। कोश के भेद– समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोश, एककालिक और कालक्रमिक कोश : विषय कोश, पारिभाषिक कोश, व्युत्पत्तिकोश, सामांतर कोश, अध्येताकोश, विश्वकोश, बोलीकोश।

इकाई –2

कोश– निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रविष्टिक्रम , व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पत्ति अर्थ (पर्याय, व्याख्या, चित्र) प्रयोग, उप– प्रविष्टियॉ, संक्षिप्तियॉ, संदर्भ और प्रतिसंदर्भ। प्रविष्टि संरचना, रूपिम, शब्द और शब्दिम सरल, व्युत्पन्न और सामासिक, शब्दिम, सामासिक शब्दिम सहप्रयोगात्मक, व्युत्पादक समास, सहप्रयोग और संदर्भ।

इकाई –3

रूप अर्थ संबंध : अनेकार्थकता : समानार्थकता, समनामता, समध्यवन्यात्मकता, विलोमता। कोश– निर्माण की समस्याऍ : समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोशों के संदर्भ में, अलिखित भाषाओं का कोश – निर्माण।

इकाई –4

कोशविज्ञान और अन्य विषयों का संबंध : कोशविज्ञान और स्वनविज्ञान , व्याकरण, व्युत्पत्तिशास्त्र और अर्थविज्ञान का संबंध। पाश्चात्य कोश परंपरा, भारतीय कोश परम्परा तथा हिन्दी कोश साहित्य का इतिहास। हिन्दी के प्रमुख कोश और कोशकार।

इकाई –5

स्वचालित सामग्री संसाधन, कम्प्यूटर और कोश निर्माण कोश – निर्माण : विज्ञान या कला।

अपेक्षित परिणामः

- कोश –परिभाषा, स्वरूप, उपयोगिता, व्याकरण, समभाषी द्विभाषी एवं बहुभाषी कोश से परिचित होगें
- काश–निर्माण की प्रक्रिया, सामग्री संकलन, व्याकरणिक कोटी, प्रयोग–प्रवृष्ठियां, संक्षिप्तियां, संदर्भ और प्रति संदर्भ का ज्ञान प्राप्त करेगें ।
- रूप अर्थ संबंध ,अनेकार्थकता, समानार्थकता, विलोमता, कोश निर्माण की समस्याएँ एवं कोश विज्ञान और अन्य विषयों का संबंध आदि का ज्ञान प्राप्त करेगें ।
- स्वचालित सामग्री संसाधन, कम्प्यूटर और कोश निर्माण– का ज्ञान प्राप्त करेगें ।

COURSE CODE:6HMHL 401

शोध प्रविधि

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1.सामाजिक अनुसंधान, व्यवहारिक अनुसंधान अर्थ,प्रकृति, महत्व का अध्ययन मनन।
2.अनुसंधान की परिकल्पना, प्रतिचयन पद्धतियों का अर्थ, परीक्षण एवं विश्लेषण।
3.आकड़ों की व्याख्या, अवलोकन पद्धतियाँ, प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार आदि का अध्ययन ।
4. अनुसंधान लेखन एवं कम्प्यूटर लेखन का अध्ययन विश्लेषण ।

पाठ्यक्रमः

इकाई –1

सामाजिक अनुसंधान : अर्थ, प्रकृति एवं महत्व। विशुद्ध और व्यावहारिक अनुसंधान। सामाजिक अनुसंधान के प्रकार एवं पद्धतियॉ। अनुसंधान समस्याओं की पहचान, चयन एवं उद्देश्य।

इकाई –2

अनुसंधान प्ररचना। परिकल्पना : अर्थ, परीक्षण एवं चर। प्रतिचयन पद्धतियॉ। प्रतिचयन की त्रुटियॉ एवं परीक्षण। समंकों का संग्रहण : प्रविधियॉ एवं यंत्र।

इकाई –3

समंको (आकड़ों) की व्याख्या। सारणी चयन। अवलोकन पद्धति। प्रश्नावली। अनुसूची।

इकाई –4

साक्षात्कार। सामाजिक सर्वेक्षण। अंर्तवस्तु विश्लेषण। सांख्यिकी व सामाजिक अनुसंधान।

इकाई –5

व्यक्तिगत अध्ययन पद्धति। पूर्वगामी सर्वेक्षण तथा व्यक्ति सूची अध्ययन। सामाजिक विज्ञानों में सिद्धान्त निर्माण। अनुसंधान लेखन (प्रतिवेदन)। अनुसंधान एवं कम्प्यूटर।

अपेक्षित परिणामः

1.सामाजिक अनुसंधान, व्यवहारिक अनुसंधान अर्थ,प्रकृति, महत्व का अध्ययन मनन कर सकगें ।
2.अनुसंधान की परिकल्पना, प्रतिचयन पद्धतियों का अर्थ, परीक्षण एवं विश्लेषण कर सकेगें।
3.आकड़ों की व्याख्या, अवलोकन पद्धतियाँ, प्रश्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार प्रक्रिया में दक्ष होगें ।
4. अनुसंधान लेखन एवं कम्प्यूटर लेखन का अध्ययन विश्लेषण में दक्ष होगें ।

Chairperson
(Board of Studies)

Dean
(Academic Council)

(Registrar)
Seal

दृश्य–श्रव्य माध्यम लेखन

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. माध्यमोपयोगी लेखन के स्वरूप और प्रकारों व संक्षिप्त इतिहास का अध्ययन मनन ।
2. रेडियो नाटक, पाठ्य नाटक, संगीत रूपक, आलेख रूपक, रेडियो रूपान्तर आदि का ज्ञानात्मक विश्लेषण।
3. टेलीविजन नाटक, ड्रामा, टेली फिल्म संचार माध्यम के अन्य विविध रूपों का अध्ययन विवेचन।
4. साहित्यिक विधाओं की दृश्य –श्रव्य रूपान्तरण कला, इलैक्ट्रानिक मीडियां समाचार संकलन संपादन, प्रंस्तुतीकरण, प्रविधि, विज्ञापन की भाषा एवं प्रविधियों का अध्ययन अनुशीलन।

पाठ्यक्रमः

इकाई –1

माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार। हिन्दी माध्यम लेखन का संक्षिप्त इतिहास।

इकाई–2

रेडियो नाटको की प्रविधि रंग नाटक, पाठ्यनाटक और रेडियो नाटक का अंतर। रेडियो नाटक के प्रमुख भेद – रेडियो धारावाहिक, रेडियो रूपांतर, रेडियो फैन्टेसी, संगीत रूपक, आलेख रूपक (डाक्यूमेंट्री फीचर)।

इकाई–3

टी.वी.नाटक की तकनीक। टेली ड्रामा, टेली फिल्म, डाक्यूड्रामा तथा टी.वी. धारावाहिक में साम्य– वैषम्य। संचार माध्यम के अन्य विविध रूप

इकाई –4

साहित्यिक विधाओं की दृश्य –श्रव्य रूपांतरण–कला। इलैक्ट्रॉानिक मीडिया द्वारा प्रसारित समाचारों के संकलन–संपादन और प्रस्तुतिकरण की प्रविधि। संचार माध्यमों द्वारा प्रसारित विज्ञापनों की भाषा। विज्ञापन फिल्मों की प्रविधि।

इकाई –5

संचार माध्यमों की भाषा। हिन्दी के समक्ष आधुनिक जनसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी की चुनौतियॉ।

अपेक्षित परिणामः

- दृश्य –श्रव्य माध्यम लेखन की विभिन्न विधाओं में दक्ष हो सकेगें।
- विद्यार्थी इस दिशा में नवीन शोध व प्रयोगों में दक्ष हो सकेगें।
- दृश्य श्रव्य माध्यमों के समग्र अध्ययन, मनन के द्वारा इस क्षेत्र में कौशल विकास कर सकेगें।

प्रेमचंद
वैकल्पिक-I

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. प्रेमचंद की रचनाओ की व्याख्या एवं गोदान, गबन, उपन्यास व कहानी–पंच परमेश्वर, मंत्र, कफ़न, ईदगाह आदि का अध्ययन मनन एवं समीक्षा।
2. प्रेमचन्द के समकालीन साहित्यकारों जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा अमृतलाल नागर आदि के साहित्य व व्यक्त्वि का अध्ययन।

पाठ्यक्रम

इकाई –1

निर्धारित रचनाओं की व्याख्या

निर्धारित उपन्यास– गोदान, गबन

निर्धारित कहानी–ठाकुर का कुआॅ– पंच परमेश्वर, मंत्र, कफन, ईदगाह, पूस की रात, बड़े भाई साहब, नमक का दरोगा, कजाकी, सदगति।

इकाई –2

प्रेमचन्द जीवन एवं रचना यात्रा : उपन्यास, कहानी, पत्रकारिता।

इकाई –3

प्रेमचन्द के पाठ्य उपन्यासों की समीक्षा।

इकाई –4

प्रेमचन्द की पाठ्य कहानियों की समीक्षा।

इकाई –5

निर्धारित रचनाकारों का द्रुतपाठ

द्रुतपाठ के निर्धारित साहित्यकार –जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर।

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थी प्रेमचन्द की जीवन यात्रा, रचनाओं एवं प्रेमचन्द के समकालीन साहित्यकारों –जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा अमृतलाल नागर आदि के साहित्य व व्यक्त्वि का अध्ययन ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- प्रेमचंद की रचनाओ की व्याख्या एवं गोदान, गबन, उपन्यास व कहानी–पंच परमेश्वर, मंत्र, कफ़न, ईदगाह आदि का अध्ययन मनन एवं समीक्षा कर सकेगें।
- विद्यार्थी इस विषय में शोध की नयी संभावनाएँ खोज सकेगें।

जयशंकर प्रसाद
वैकल्पिक –I

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः

1. जयशंकर प्रसाद की रचनाओ स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त, कामायनी, अजातशत्रु की व्याख्या एवं समीक्षा
2. जयशंकर प्रसाद की हिन्दी नाटक परंपरा, प्रगति एवं नाट्य यात्रा का अध्ययन मनन।
3. प्रसाद के नाटकों की पृष्ठभूमि, रंगमंचीयता, नाट्यशास्त्रीय चिंतन एवं पाठ्य नाटकों की आलोचनात्मक समीक्षा ।
4. जयशंकर प्रसाद के समकालीन, सेठ गोविंद दास भुवनेश्वर, मोहन राकेश, सुरेन्द्र वर्मा लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि का अध्ययन मनन।

पाठ्यक्रम

इकाई –1

निर्धारित रचनाओं की व्याख्या

निर्धारित व्याख्यांश– पाठ्य रचनाएँ– स्कन्दगुप्त चन्द्रगुप्त कामना अजातशत्रु

इकाई–2

हिन्दी नाटक परम्परा और प्रगति तथा प्रसाद की नाट्य यात्रा।

इकाई–3

प्रसाद के नाठकों की पृष्ठभूमि, रंगमंचीय परिकल्पना, तथा नाट्यशास्त्रीय चिंतन।

इकाई –4

प्रसाद के पाठ्य नाटकों की आलोचनात्मक समीक्षा।

इकाई –5

निर्धारित साहित्यकारों का द्रुतपाठ

द्रुतपाठ के साहित्यकार – सेठ गोविन्ददास, भुवनेश्वर, मोहन राकेश, सुरेन्द्र वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र।

अपेक्षित परिणाम

- विद्यार्थीय हिन्दी नाट्य परम्परा एवं जयशंकर प्रसाद के नाटकों और समकालीन साहित्यकारों व रचनाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।
- विद्यार्थी प्रसाद एवं प्रसाद युग में शोध की नयी संभावनाएँ दे सकेगें।
- जयशंकर प्रसाद की हिन्दी नाटक परंपरा, प्रगति एवं नाट्य यात्रा का अध्ययन मनन कर सकेगें।
- प्रसाद के नाटकों की पृष्ठभूमि, रंगमंचीयता, नाट्यशास्त्रीय चिंतन एवं पाठ्य नाटकों की आलोचनात्मक समीक्षा कर सकेगें।
- जयशंकर प्रसाद के समकालीन, सेठ गोविंद दास भुवनेश्वर, मोहन राकेश, सुरेन्द्र वर्मा लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि का अध्ययन मनन कर सकेगें।